संगीत (कंठ्य संगीत) के विषय में Ph.D. की उपाधि हेतु संक्षेपिका

Synopsis on

"उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

"Uttar Hindustani Sangeet Paddhati ke Aprakashit, Aprachalit aur Navanirmit Audav-Audav, Audav-Shadav Tatha Shadav-Shadav Jati ke Ragon ka Vishleshanatmak Adhyayan"

शोधार्थी

प्रविण काशीनाथ आहिरे

रजिस्ट्रेशन नं. FOPA/61

रजिस्ट्रेशन दि. 08/02/2017

मार्गदर्शक

डॉ. अश्विनीकुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

डिपार्टमेन्ट ऑफ़ इन्डियन क्लासिकल म्यूज़िक-वोकल

फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स

दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा, वड़ोदरा.

प्रस्तावना (Preface)

संगीत के इतिहास की ओर दृष्टि की जाय तो यह पता चलता है की ग्रन्थकारों ने कालानुसार समय-समय पर रागों का वर्गीकरण अपने अनुसार किया है तथा इनके समय में प्रचलित, अप्रचलित तथा नवनिर्मित रागों की चर्चा भी की है | समय-समय पर कालानुसार आमिर खुसरो, पंडित पुंडरिक विट्ठल, तानसेन, उस्ताद आमिर खाँ, पंडित रविशंकर, कुमार गान्धर्व इत्यादि अनेक संगीत-विद्वानों, गायक-वादकों द्वारा नए रागों की निर्मिती भी होती रही है |

संगीत अनंत महासागर की तरह है, कितने ही अप्रचलित अछोप राग सिर्फ ग्रन्थों तक ही सिमित है | ग्रन्थों में दिया गया राग वैभव यदि व्यवहार में गाने-बजाने हेतु नहीं आते हैं तब ऐसे राग धीरे-धीरे लुप्त हो जाएँगे | ऐसे अप्रचलित रागों को संगीत जिज्ञासु, श्रोताओं के समक्ष प्रचार-प्रसार करने हेतु; तथा कुछ अप्रकाशित; कुछ नए राग यदि शास्त्रोक्त विवरण एवं उपलब्ध बंदिश के साथ ग्रंथस्त होकर संगीत जगत, संगीत जिज्ञासु और आशास्पद युवा कलाकारों एवं श्रोताओं के सामने आते हैं, तो भारतीय संगीत में अपने आप नए रागों की प्रति रूचि पैदा होगी और प्रचलित राग गाने के साथ-साथ अप्रचलित, अप्रकाशित तथा नवीन रागों की तैयारी करने के लिए प्रेरित होंगे |

प्रचलित राग गायन गलत नहीं है, परन्तु पर्याप्त भी नहीं है | जीवन का दूसरा नाम सर्जनशीलता है | सभी क्षेत्रों में आज उत्कृष्ट तकनिकी और वैज्ञानिक संशोधन दिन-प्रतिदिन होते रहे हैं, तो संगीत में भी संशोधन और सर्जन संगीत जगत, संगीत जिज्ञासु के हित में होना चाहिए , जिससे आने वाली पीढ़ी को एक नया आयाम करने का अवसर प्राप्त हो |

इस शोध-प्रबंध में कुछ वाग्येकार, विद्वान तथा गायक-वादकों द्वारा रचे हुए उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा संकलन करके ग्रंथस्त रूप में शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने का नम्र प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है |

प्रस्तुत शोध-प्रबंध से शोधार्थी के ज्ञान में वर्धन तो हुवा ही है परन्तु आगे भी विद्यार्थी, श्रोता एवं आनेवाली सांगीतिक नयी पीढ़ी के लिए अवश्य लाभ-रूप सिद्ध होगा |

प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता (Need for the research on this topic)

उत्तर हिन्दुस्तानी पद्धति में कुछ राग ऐसे हैं जो प्रचार में नहीं के बराबर है, ऐसे अछोप एवं अप्रकाशित, अप्रचलित तथा नवनिर्मित राग अगर संगीत जगत के जिज्ञासु, विद्यार्थी एवं आशास्पद युवा पीढ़ी के कलाकारों तक पहुँचे और व्यवहार में यह परम्परा निरंतर चलती रहे तो भारतीय संगीत के उपर्युक्त सभी राग जीवित एवं क्रियात्मक रूप से सभी श्रोताजनों के सामने आ सकते हैं | वर्तमान संगीत में ऐसा कोई ग्रंथ दृष्टिगोचर नहीं होता है की जिनमें उपर्युक्त श्रेणी के रागों का संकलन हो, तब इस शोध कार्य द्वारा संगीत जगत की सेवा करने का एक नम्र प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है |

परिकल्पना (Hypothesis)

जीवन का दूसरा नाम सर्जनशीलता है | सभी क्षेत्र में आज उत्कृष्ट तकनीकी और वैज्ञानिक संशोधन दिन-प्रतिदिन होते रहे हैं, तो संगीत में भी संशोधन और सर्जन ज़रूरी है | संगीत अनंत महासागर की तरह है इसमें कई अप्रचलित, अप्रकाशित राग विद्यमान हैं तथा नवनिर्मित रागों की गुंजाइश भी है | ऐसे उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा रागों की शास्त्रोक्त जानकारी एवं उपलब्ध बंदिशों के साथ ग्रंथस्त होकर संगीत जगत, संगीत जिज्ञासु और आने वाली पीढ़ी के लिए लाभ दायक हो ऐसी शोधार्थी की परिकल्पना है |

उद्देश्य (Objective)

कुछ राग ऐसे जो समय के कालचक्र में खोगये हैं, ऐसे रागों को उजागर करना, कुछ राग ऐसे हैं जो कालानुसार समय-समय पर घरानेदार गायक-वादकों की परम्परा में रहे हैं तथा कुछ राग संगीत विद्वानों द्वारा नए सर्जनात्मक स्वरुप भी रहे हैं, ऐसे रागों का शास्त्रोक्त विवरण एवं उपलब्ध बदिशों द्वारा ज्ञानोपार्जन करना यह भी एक उद्देश्य है | जिससे नए राग एवं उपब्ध बंदिशें संगीत जगत के संगीत प्रेमियों, संगीत जिज्ञासुं तथा विध्यार्थिगन के समक्ष आ सकें |

जानकारी एकत्रित करने की पद्धति (Data collection methodology)

१. विश्वभर में उपलब्ध ध्वनि मुद्रित शास्त्रीय संगीत तथा इससे जुड़ी अनेक प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु इन्टरनेट एवं इलेक्ट्रोनिक उपकरणों जैसे माध्यमों का सहारा लिया गया है |

२. शास्त्रीय संगीत में प्रायोगिक तथा शास्त्रोक्त रूप से लिखे गये ग्रंथों, सामायिको, वृत्तपत्रों इत्यादि में लिखित सामग्री एवं प्राप्त जानकारी से आवश्यक मदद ली गई है |

३. कुछ विद्वान संगीतज्ञों, कलाकारों एवं कलागुरुओं का संपर्क करके प्रस्तुत विषय के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई है |

शोध कार्य की योजना (Research Methodology)

इस शोध कार्य को करने के लिए पुस्तकालयों में से विषय संलग्न शास्त्रीय संगीत में प्रायोगिक तथा शास्त्रोक्त रूप से लिखे गये ग्रंथों, शोध प्रबंध, सामायिकों, वृत्तपत्रों इत्यादि का अभ्यास करके आवश्यक ज्ञान तथा जानकारी का संकलन किया है | कुछ कलाकारों, कलागुरुओं एवं विद्वानों से वार्तालाप, चर्चा, विचार-विमर्श द्वारा विषय संबंधी ज्ञान अर्जित किया है | कुछ उपयोगी ध्वनि-मुद्रण के चयन द्वारा उनका विश्लेषणात्मक श्रवण, मूल्यांकन किया गया है | इस शोध कार्य के लिए विषय से सम्बन्धित जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु इन्टरनेट एवं इलेक्ट्रोनिक उपकरणों जैसे माध्यमों का भी सहारा लिया गया है | तथा इन माध्यमों से कुछ जानकारी भी उपलब्ध हुई है | इस शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा अपने सांगीतिक अनुभवों का विषयोचित मूल्यांकन भी उपयोगी सिद्ध हुआ है |

उपरोक्त सभी स्त्रोतों से संकलित जानकारी की आवशकता अनुसार तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन और मूल्यांकन द्वारा प्रस्तुत विषय के परिपेक्ष्य में उसका सुयोग्य उपयोग करना, इत्यादि का शोधार्थी की शोध कार्य पद्धति एवं योजना में समाविष्ट रहा है |

शोध कार्य की सीमा (Limitation of Research)

राग संगीत एक महासागर की भांति विशाल है, इस में कई सृजनात्मक संभावनाएँ भी छुपी हुई है | प्राचीन जाति गायन, मध्यकालीन राग-रागिनी वर्गीकरण, शुद्ध, छायालग तथा संकीर्ण राग वर्गीकरण, रागांग वर्गीकरण, मेल-राग वर्गीकरण एवं थाट-राग वर्गीकरण इत्यादि समय-समय पर प्रचलित रहे | आज हमारे समक्ष पं. भातखंडे जी द्वारा प्रचार में लाइ गई थाट-राग वर्गीकरण पद्धति अधिक प्रचार में है | हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के राग मुख्यत: तीन जातियों में बटे हुए हैं -१) औडव २) षाडव ३) सम्पूर्ण, तथा इन तीन जातियों के समिश्रण से ९ जातियाँ बनती है |

औडव-औडव	षाडव-षाडव	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण
औडव-षाडव	षाडव-औडव	सम्पूर्ण-औडव
औडव-सम्पूर्ण	षाडव-सम्पूर्ण	सम्पूर्ण-षाडव

उपरोक्त जातियों में से शोध कार्य की सीमा तय करते हुए शोधार्थी द्वारा "उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों को विश्लेषणात्मक अध्ययन" के लिए चुन लिया गया है |

साहित्य की समीक्षा (Review of literature)

इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न स्त्रोत से एकत्रित जानकारी को संबंधित विषय के गुणमान्य विद्वान् ज्ञाताओं द्वारा प्रामाणीकरण किया गया है | जिससे एक विशुद्ध मौलिक शोध निबंध तैयार होने में मदद मिली है | अनुसंधान के लिए प्रासंगिक और सही जानकारियों को ही स्थान दिया गया है और अनावश्यक, अवांछित जानकारी को त्याग दिया गया है |

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अध्याय (Chapterisation)

इस शोध प्रबंध को कुल चार अध्यायों में विभक्त किया है एवं पाँचवा अध्याय उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है |

प्रथम अध्याय : भारतीय संगीत का इतिहास

इस अध्याय के अन्तर्गत संगीत की व्याख्या देते हुए संगीत के उद्भव को देखते हुए अन्धकार युग, पाषाण काल, ताम्र काल, लौह काल, सिन्धु घाटी इत्यादि में संगीत के विकासक्रम को देखते हुवे वैदिक काल, ब्राह्मण काल में संगीत की ओर दृष्टि करते हुए नारदीयशिक्षा में स्वरों का उद्भव स्थान तथा नामकरण, ग्रामराग तथा उनका विकास क्रम इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है | आगे भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र के अन्तर्गत स्वर, ग्राम, सारणा, जाति, जाति गायन, भरतकालीन गीतियाँ, धृवा गीत इत्यादि पर प्रकाश डाला गया हैं | आगे मतंग कृत वृहद्देशीय के अंतर्गत किन्नरी वीणा, मूर्च्छना, मतंग की जातियाँ, जाति गायन के स्थान पर राग शब्द का सर्व प्रथम उल्लेख, गीति इत्यादि के संबंध में वर्णन किया गया है | आगे संगीत रत्नाकर के अंतर्गत दस विध राग लक्षण इत्यादि की चर्चा की गई हैं | इस पश्चात पंडित लोचन कृत राग तरंगिणी के अंतर्गत निबद्ध अनिबद्ध गान, श्रुति, स्वर, थाट, राग गायन समय, औडव, षाडव, सम्पूर्ण जाति इत्यादि विषय पर चर्चा की गई हैं | आगे चलकर राग वर्गीकरण की परंपरा को प्राचीनकाल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल में बाँटा गया है | प्राचीन काल में जाति, मध्य काल में शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण, राग-रागिनी वर्गीकरण तथा मेल राग वर्गीकरण इत्यादि पर चर्चा की गई है | आधुनिक काल में रागांग पद्धति तथा थाट-राग वर्गीकरण इत्यादि की चर्चा करते हुए रागों की जातियाँ की चर्चा की गई है | आगे प्रचलित,अप्रकाशित तथा अप्रचलित राग एवं नव निर्मित रागों की व्याख्या स्वरुप चर्चा की गई है |

द्वितीय अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव जाति के राग

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनका शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

तृतीय अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-षाडव जाति के राग

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनका शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

चतुर्थ अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित षाडव-षाडव जाति के राग

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनका शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

पंचम अध्याय : उपसंहार (Conclusion) : इस अध्याय में "उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" के दौरान जो सबंधित तथ्य उभरकर सामने आये हैं उनका विवेचनात्मक अभ्यास करके योग्य ढंग से संकलन किया गया है | जो भविष्य की आने वाली पीढ़ी के लिए अतिशय मार्गदर्शक और लाभदायक होगा |

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत संगीत की व्याख्या के साथ संगीत के उद्भव के विषय में अनेक विद्वानों के मंतव्य का अभ्यास करके अन्धकार युग के अन्तर्गत पूर्व पाषाण काल का अभ्यास करते हुए यह तथ्य सामने आये की भाषा का ज्ञान तो नहीं था परन्तु 'हूँ हूँ हेवा हूँ हूँ हेवा' जैसी विचित्र प्रकार की सांगीतिक ध्वनि यह निकालते थे | उत्तर पाषाण काल के अभ्यास द्वारा यह तथ्य सामने आये की इस युग में सामूहिक संगीत का जन्म हो चूका था तथा संगीत ने इस काल के लोगों को सभ्यता की ओर झुकाया | ताम्र काल में संगीत की स्थिति इतनी परिपक्व हो गई थी की आने वाले युग के लोगों ने भी इसका लाभ उठाया, इस युग में संगीत को धार्मिक रूप दिया गया | लोह काल में इस युग के लोग विवाह उत्सव गा-बजाकर करते थे | आगे सिन्धु घाटी की सभ्यता और संगीत के विषय का अभ्यास के दौरान यह तथ्य सामने आये की सिन्ध प्रदेश के लरकाना जिले में मोहनजोदड़ो नामक स्थान पर खुदाई में प्राचीनतम शिवजी की तांडव नृत्य करती हुई मूर्ति प्राप्त हुई है; इससे यह पता चलता

है की इस काल में संगीत कितना उन्नत अवस्था में था | आगे वैदिक युग के अन्तर्गत स्वर (यम) की संख्या, सामवेद में स्वरों का स्वरुप इत्यादि के अभ्यास से यह पता चलता है की सामगान में पहले केवल तीन से चार स्वर होते थे, बाद में धीरे-धीरे स्वरों की संख्या बढ़कर इन में सातों स्वरों का प्रयोग होने लगा | यह भी पता चलता है की सामवेद के स्वरों का स्वरुप अवरोहात्मक था | तथा सामगान का ग्राम " म ग रे सा नि ध प" इस प्रकार अवरोहात्मक क्रम से था, जो मध्यम स्वर से प्रारंभ होता था | आगे नारदीयशिक्षा के अन्तर्गत स्वरों का उद्भव स्थान, तारता, राग तथा ग्रामराग का अर्थ, ग्रामराग का नामकरण तथा विकास क्रम इत्यादि का वर्णन किया है | आगे नाट्यशास्त्र के अन्तर्गत स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, सारणा, जाति, जाति गायन, गितियाँ, ध्रुवा गीत इत्यादि की चर्चा की गई है | आगे मतंग कृत 'वृहदेशीय' के अन्तर्गत मतंग को धातु की वंशी का किन्नरी वीणा का अविष्कारक माना है | वीणा के तार पर परदे लगाने का काम सर्व प्रथम मतंग ने किया | मतंग ने ग्राम और मूर्छना शब्द की विस्तृत परिभाषा की है | जाति गायन के स्थान पर 'राग' शब्द का प्रयोग सर्व प्रथम इस ग्रन्थ में हुवा है | भरत के काल के जातिगायन का विकास होकर मतंग के समय में राग गायन के रूप में प्रचलित हो गया था | मतंग ने सात गितियों के अन्तर्गत ग्राम रागों को बाँटा है | इस के बाद संगीत रत्नाकर के दस विध राग लक्षण की चर्चा की गई है | तत्पश्चात मुसलामानों के काल का सर्व प्रथम ग्रन्थ राग तरंगिणी के अभ्यास से यह प्रतीत होता है की लोचन ने राग-रागिनी पद्धति के स्थान पर थाट-राग पद्धति को अपनाकर थाट राग पद्धति का बीजारोपण किया गया है | इस ग्रन्थ में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान ऐसे गान के दो भेद बताये गए है | लोचन का शुद्ध थाट; वर्त्तमान काफी थाट के समान है | इस ग्रन्थ में रागों के गायन समय तथा औडव, षाडव तथा सम्पूर्ण जाति के रागों का वर्णन भी किया गया है | आगे, चली आ रही राग वर्गीकरण पद्धतिको तीन काल में बाँटा है १) प्राचीन काल २) मध्य काल ३) आधुनिक काल | प्राचीन काल के ग्रन्थकारों में भरत, मतंग तथा नारद महत्त्व के ग्रंथकार है | मतंग के समय में ही राग गायन का प्रचलन शुरू हो गया था | नारद कृत 'संगीत मकरंद' में षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम तथा गंधार ग्राम यह तीनो ग्रामों का वर्णन मिलता है; इस ग्रन्थ में षड्ज ग्राम तथा मध्यम ग्राम को भूलोक में प्रचलित बताकर गंधार ग्राम को स्वर्ग लोक का बताया है | स्त्री, पुरुष तथा नापुशंक रागों की चर्चा सर्व प्रथम इस ग्रन्थ में की गई है | औडव, षाडव तथा सम्पूर्ण जाति के कुछ रागों के नाम तथा ग्रह स्वर भी बताये हैं | मध्यकाल में शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण एवं राग-रागिनी वर्गीकरण की चर्चा की है; जिसके

अन्तर्गत शिवमत, हनुमन्त, रागार्णव मत, कृष्ण मत तथा भरत मत मुख्य है | आगे मेल राग वर्गीकरण की चर्चा के पश्चात आधुनिक काल के अन्तर्गत रागांग पद्धति, थाट राग वर्गीकरण की चर्चा के बाद 'राग' रागों की जातियाँ इत्यादि के विषय में चर्चा के बाद प्रचलित राग, अप्रकाशित तथा अप्रचलित राग तथा नवनिर्मित राग इत्यादि की व्याख्या स्वरुप चर्चा की है |

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत औडव-औडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान जो कुछ तथ्य स्वरुप अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित राग सामने आये हैं उनका तुलनात्मक शास्त्रोक्त विवरण अंकित करके उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत औडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान जो कुछ तथ्य स्वरुप अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित राग सामने आये हैं उनका शास्त्रोक्त विवरण अंकित करके उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान जो कुछ तथ्य स्वरुप अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित राग सामने आये हैं उनका शास्त्रोक्त विवरण अंकित करके उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

इस शोधकार्य द्वारा निश्चितरूप से शोधार्थी के ज्ञान में तो संवर्धन हुआ ही है | परन्तु इस शोधकार्य के अभ्यास के दरम्यान जो चिंतन-मनन-मंथन, विचार-विमर्ष, विश्लेषण, तुलनात्मक चर्चा इत्यादि द्वारा जो फलस्वरूप तथ्य उभरकर सामने आये हैं, इन से आनेवाली नयी पीढ़ी, संगीत जिज्ञासु तथा संगीत के विद्यार्थियों को अवश्य लाभ होगा |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(BIBLIOGRAPHY)

सन्दर्भ पुस्तकें

English Books

1. Atre, P. (2016). Swaranjanee. B. R. Rhythms, Delhi.
2. Rao, B. Subba. (1980). Raganidhi, (Volume I). (Second Impression). The Music Academy Madras.
3. Rao, B. Subba. (1964). Raganidhi, (Volume II). (First Impression). The Music Academy Madras.
4. Rao, B. Subba. (1965). Raganidhi, (Volume III). (First Impression). The Music Academy Madras.
5. Rao, B. Subba. (1966). Raganidhi, (Volume IV). (First Impression). The Music Academy Madras.

गुजराती पुस्तक

१. ठक्कर, रतनसी लीलाधर. (१९१०). संगीत दर्पण. मे गायन उत्तेजक मंडळी, मुंबई |

हिन्दी पुस्तकें

१. आठवले, वि. रा. (ऑगस्ट २००८). नादवैभव, (प्रथम आवृत्ती). प्रसाद कुलकर्णी, मुंबई |

२. काशीकर, शं. वि. (२०२०). श्रुति विलास, (छठवाँ संस्करण). प्रकाशक – प्रसाद कुलकर्णी, संस्कार प्रकाशान, मुंबई |

३. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (जून १९७०), (अभिनव राग दर्पण). (प्रथम भाग) |

४. खाँ, अमान अली (अमर). (२०१७). अमर बंदिशे. संपादक - कोराटकर सुहासिनी. प्रकाशक - प्रशाद कुलकर्णी, मुंबई |

५. चौधरी, सु. (२००८). शारंगदेवकृत संगीतरत्नाकर, (द्वितीय खंड). (प्रथम संस्करण). राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली |

६. जोशी, उ. (१९६९, जनवरी २६). भारतीय संगीत का इतिहास (द्वितीय संस्करण.). मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश |

७. जोशी, भो. द. (१९९४). संगीत शास्त्र तथा राग-माला, (प्रथम संस्करण). सम्पादक - जोशी कुसुम, जोशी हेमा, जोशी हंसा, जोशी भारती, प्रकाशक - जोशी श्रीमती सरोज, सरोज प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली |

८. झा, रामाश्रय (१९९१). अभिनव गीतांजलि, (भाग दो). (तृतीय संकरण). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद |

९. झा, रामाश्रय. (१९९१). अभिनव गीतांजलि, (भाग तिन). (तृतीय संकरण). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद |

१०. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि, (भाग चार). (प्रथम संकरण). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद |

११. टेंकशे, श. अ. (१८९५). नव-राग-निर्मिती. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई |

१२. ठाकुर, ज. सिं. (१९९४). भारतीय संगीत का इतिहास (प्रथम संस्करण.). सम्पादिका प्रेमलता शर्मा. संगीत रिसर्च एकेडेमी, कलकत्ता के लिए विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |

१३. पंडित, य. स. (१९६२). हिंदुस्थानी ख्याल - गायकी, (भाग पाँचवा). भारतीय संगीत प्रसारक मण्डल, पुणे |

१४. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान, (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे |

१५. पटवर्धन, वि. (१९८४). राग विज्ञान, (पंचम भाग). (षष्टम आवृत्ती). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे |

१६. पटवर्धन, वि. (१९९०), राग विज्ञान, (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे |

१७. पटवर्धन, वि. (अप्रैल १९८१). राग विज्ञान, (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे |

१८. पटवर्धन, वि. (दिसम्बर १९६८). राग विज्ञान, (चतुर्थ भाग). (पंचम आवृत्ती). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे |

१९. पणशीकर, दि. (२०१९). आडाचौताल बंदिशे, (द्वितीयावृत्ती). प्रसाद कुलकर्णी, मुंबई |

२०. पत्की, ज. दे. (अगस्त १९५९). अप्रकाशित राग, (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

२१. पत्की, ज. दे. (जुलाई १९८२). अप्रकाशित राग, (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

२२. पत्की, ज. दे. (मई १९६५). अप्रकाशित राग, (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

२३. परांजपे, श. श्री. (१९६९). भारतीय संगीत का इतिहास (प्रथम संस्करण.). चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |

२४. परांजपे, श. श्री. (१९७२). संगीत बोध (प्रथम संस्करण.). मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल |

२५. भट्ट, बलवंतराय गुलाबराय (मई १९७४). भावरंग-लहरी. (द्वितीय भाग) |

२६. भातखंडे, वि. (जनवरी १९९९). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका, (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

२७. भातखंडे, वि. (दिसम्बर १९९९). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका, (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

२८. माथुर, सु. (२००६). हिन्दुस्तानी संगीत की राग-सम्पदा (प्रथम संस्करण). संजय प्रकाशन, दिल्ली |

२९. राजा नवाब अली. (जून १९५०). मारिफुन्नग़मात, (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

३०. रातंजनकर, एस. एन. (१९९०). अभिनवगीतमंजरी, (प्रथम भाग). (तृतीय संस्करण). प्रकाशक - आचार्य एस.एन. रातंजनकर फाऊण्डेसन, बम्बई |

३१. रातंजनकर, एस. एन. (१९९४). अभीनव गीत मंजरी, (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण). आचार्य, एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन दादर, बम्बई |

३२. वसन्त. (१९६२). राग-कोष (प्रथम संस्करण.). सम्पादक लक्ष्मीनारायण गर्ग. संगीत कार्यालय हाथरस, उ.प्र. |

३३. शर्मा, स्वतन्त्र. (२०१४). भारतीय संगीत : एक ऐतिहासिक विश्लेषण (द्वितीय संस्करण.). अनुभव पब्लिशिंग हॉउस, इलाहाबाद |

३४. शास्त्री शुक्ल, बा. (२००९). नाट्यशास्त्र, भाग – ४. (पुनर्मुद्रण.). बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री. चोखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी |

३५. शाह, ज. त्रि. (१९९१). मल्हार के प्रकार, (द्वितीय संस्करण). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई |

३६. शाह, ज. त्रि. (जनवरी २०००). सारंग के प्रकार, (द्वितीय संस्करण). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई |

३७. शाह, ज. त्रि. (मार्च १९९१). भैरव के प्रकार, (प्रथम संस्करण). सम्पादक - गिण्डे के. जी., संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश |

३८. श्रीवास्तव, ह. (१९९८). राग परिचय, (भाग ४). (दसम आवृत्ति.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद |

३९. सिंह, ला. की. (२०१४). भारतीय संगीत ग्रन्थ. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली |

४०. हळदनकर, श्री. ब. (सप्टेम्बर २००१). 'रसपिया' बंदिश. रागश्री संगीत प्रतिष्ठान, मुलुंड, मुंबई |

४१. हीराणी, चंद्रकांत. (२००८). अप्रचलित राग, (प्रथम संस्करण). शर्मा पब्लिशिंग हाउस, जयपुर |

शोध प्रबंध

१. पटेल, चिं. (२०१०). उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीतना अप्रचलित रागोनुं अध्ययन |

साक्षात्कार

१. पंडित ईश्वरचंद्र, भूतपूर्व डीन, फैकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स, दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा | दिनांक : १३ /०७/२०२२, बरोड़ा, गुजरात |

इन्टरनेट का विवरण (Web Link)

१. राग - रसरंजनी : **https://youtu.be/fZ7lViRKGXU** रचनाकार - उस्ताद हाफ़िज एहमद खाँन (रामपुर घराना)

२. राग – सालंग सारंग : https://youtu.be/WxfMrTd4pX0 गायक : प्रभाकर करकरे

३. राग – जलधरकेदार : https://youtu.be/ovP2jobtPv4 स्वर : रामचंन्द्र पुरुषोत्तम मराठे राग रसिक

४. राग – श्रीकल्याण : गायक : अशोक हुगन्नवर https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/ShreeKalyanTypeII_AshokHuggannavar.mp3

५. राग – वैजयंती : गायक : विदुषी अलका दास https://youtu.be/qSv600kpAx0

६. राग – झीलफ, गायक : पं. जितेन्द्र अभिशेकी https://youtu.be/HfNYr-xY6Gk

७. राग – सुहानी तोड़ी https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/SuhaaniTodi_GhulamHaiderKhan.mp3

८. राग – सुहानी तोड़ी : https://youtu.be/uN3W30tlZ2g गायक : गुलाम हैदर खाँ (कव्वाल बच्चो का घराना)

९. राग – छाया तोड़ी https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/ChhayaTodi_VijayBakshi.mp3

१०. राग – भूपाल तोड़ी https://youtu.be/OR-5LMNn59s

११. राग – अमीरखानी कौंस
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/AmirkhaniKouns_AmirKhan.mp3

१२. राग - अमीरखानी कौंस https://youtu.be/hvGF3zdKcPs

१३. राग – अमृतवर्षिणी : https://youtu.be/sQZZlyBzZTU

१४. राग – देवांगिनी : https://youtu.be/1vU7h3-viCU रचनाकार- पं. यशवंत देव, गायक: प्रसाद सावकार

१५. राग – देवांगिनी : https://youtu.be/1vU7h3-viCU

१६. राग – मधुरंजनी : https://youtu.be/2o9Sw1blf7Q गायक : विजय कोपरकर |

१७. राग – मधुरा
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/Madhura_VijayBakshi.mp3

१८. राग – मधुरा
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/Madhura_VijayBakshi.mp3

१९. राग – राजेश्वरी https://youtu.be/kM5l5CrvTAw रचनाकार : उ. इनायत हुसैन खाँ, गायक : ऊ.राशिद खान

२०. राग – चंद्रप्रभा : https://youtu.be/ZLznuZvSvik गायक : राशिकलाल अन्धारिया

२१. राग – भूपकली / प्रतीक्षा / भूपेश्वरी
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/Bhoopkali_VijayRaghavRao_Bansuri.mp3

२२. राग – प्रतीक्षा / भूपेश्वरी : https://youtu.be/VkDMsmw6icY रचनाकार : पं. मणि प्रसाद (किराना घराना)

२३. राग – भिन्न रागेश्री
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/BhinnaRageshri_RasiklalAndharia.mp3

२४. राग – भूपनट https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/BhoopNata_ChhoteGandharva.mp3

२५. राग – प्रतापवराली https://youtu.be/h5PACgDQGws रचनाकार : मास्टर नवरंग (भेंडीबाज़ार घराना) |

२६. राग – भवमत भैरव : https://youtu.be/47JOEjBjfq0 गायक: पं. कुमार गन्धर्व

२७. राग – लंकदहन सारंग : https://youtu.be/INDvIxZlRgU गायक : श्रुति सुडोलिकर

२८. राग – सुजानी मल्हार https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/SujaniMalhar_YHKhan.mp3

२९. राग – सुजानी मल्हार : https://youtu.be/bqUH8Ha3A9Y

३०. राग – सरस्वती https://youtu.be/56bY0-WpeN8 गायक : मुबारकअली खान , Live at Al-Hamra Art Centre in Lahor on 25 November 2011 (Lahor Music Forum) You Tube

३१. राग – दीपक https://youtu.be/k25zubw8j8E रचनाकार : उ. निसार्हुसैन खा (रामपुर घराना)

३२. राग – नट सारंग : https://youtu.be/QFphSSd8ScI गायक : विजय बक्शी

३३. राग – मियांकी सारंग : https://youtu.be/_YsLrD_aIFk गायक : शरद साठे

३४. राग – अंबिका सारंग : https://youtu.be/nWqHYvG-R98

३५. राग – कौशिकरंजनी : https://youtu.be/i9KHxXGJOt0 रचनाकार : चिदानन्द नगरकर

३६. राग – गोपी बसंत : https://youtu.be/TVpaaXootVc गायक : विश्वनाथ रिंगे |

३७. राग – मालव : https://youtu.be/n81jDQwP8FI पंडित, य. स. (१९६२). हिंदुस्थानी ख्याल - गायकी, (भाग पाँचवा). भारतीय संगीत प्रसारक मण्डल, पुणे. पृ.१४१ से १४२ |

३८. राग – परमेश्वरी : https://youtu.be/Nin99dMWv_o गायक : पं. प्रभाकर कारेकर

३९. राग – मधुकल्याण : www.oceanofragas आठवले, वि. रा. (२००८). नादवैभव, (प्रथम आवृत्ती). संस्कार प्रकाशन, मुंबई. पृ.९२ |

४०. राग – अहीर ललित : https://youtu.be/ceW9ZUs2jrk गायक : पं. सी.आर. व्यास |

४१. राग – मालती बसन्त : गायक : Ustad Ghulam Taqi khan (Rampur Sahaswan Gharana) https://youtu.be/cNH8clLLOF4

४२. राग – सालगवराली : गायक : समेरस चौधरी https://youtu.be/cxv-wIVCW0Q